उपनिषद्

उपनिषद् अध्यात्मविद्या अथवा ब्रह्मविद्या को कहते हैं। वेदका अन्तिम भाग होने से इसे वेदान्त भी कहा जाता है। वेदान्त सम्बन्धी श्रुति-संग्रह-ग्रन्थों के लिए भी उपनिषद् शब्द का प्रयोग होता है। स्वामी करपात्री जी महाराज ने उपनिषद् को इस प्रकार परिभाषित किया है-

"प्रत्यक्-चैतन्याभिन्न परब्रह्म को प्राप्त अथवा व्यक्त कराने वाली, निःसन्धिबन्धनात्मिका चिज्जडग्रन्थिस्वरूपा अविद्या को शिथिल करनेवाली अविचारित रमणीय नामरूप-क्रियात्मक मायामय विश्वप्रपञ्च को समोन्मूलन करके जीव की ब्रह्मात्मकता को बोधित कराने वाली ब्रह्मविद्या ही उपनिषद् है।"

स्वामीजी की स्पष्ट मान्यता है कि ये उपनिषद् अपौरुषेय वेदस्वरूप ही हैं। वे परमेश्वर के निःश्वासभूत और अनादि ही हैं।

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

उपनिषद् शब्द की व्युत्पत्ति 'उप' और 'नि' उपसर्गपूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने से हुई है। उप - समीप, नि - निश्चय से या निष्ठापूर्वक, सद् - बैठना। अतः इसका अर्थ होता है - तत्त्वज्ञान के लिए गुरु के पास सविनय बैठना। इस तत्त्वज्ञान के प्रतिपादन के कारण इन ग्रन्थों को भी उपनिषद् कहा जाने लगा। 'षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु' - इस प्रकार सद् धातु के तीन अर्थ हैं - (i) विशरण - नाश होना, जिससे संसार की बीजभूत अविद्या का नाश होता है, (ii) गति - पाना या जानना, जिससे ब्रह्म की प्राप्ति होती है या उसका ज्ञान होता है, (iii) अवसादन → शिथिल होना, जिससे मनुष्य के दुःख शिथिल होते हैं। अतः शंकराचार्य ने अविद्या नाश, दुःख निरोध और ब्रह्म प्राप्ति - इन तीन अर्थों को लेकर उपनिषद् को ब्रह्मविद्या का द्योतक माना है।

भारतीय तत्त्वज्ञान तथा धर्मसिद्धान्तों का मूल स्रोत होने के कारण ही आचार्य बलदेव उपाध्याय ने उपनिषदों को आध्यात्मिक मानसरोवर माना है -

"उपनिषद् वस्तुतः वह मानसरोवर है जिससे ज्ञान की भिन्न भिन्न सरिताएं निकलकर इस पुण्यभूमि में मानवमात्र के ऐहिक कल्याण तथा आमुष्मिक मंगल के लिए प्रवाहित होती है। वैदिक धर्म की मूल-तत्त्व प्रतिपादिका प्रस्थानत्रयी में मुख्य उपनिषद् ही हैं। अन्य प्रस्थान - गीता तथा ब्रह्मसूत्र - उसी के ऊपर आश्रित हैं। भारतवर्ष में उदय लेने वाले समस्त दर्शनों का - सांख्य तथा वेदान्त आदि का - ही यह मूलग्रन्थ नहीं है, अपितु जैन तथा बौद्ध दर्शनों के भी मौलिक तथ्यों की आधारशिला यही है। इनके अध्ययन से इस संस्कृति के आध्यात्मिक रूप का सच्चा परिचय हमें उपलब्ध होता है।"

उपनिषद् वेद का ज्ञानकाण्ड है। यह चिरप्रदीप्त वह ज्ञानदीपक है जो सृष्टि के आदि से प्रकाश देता

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

चला आ रहा है। इसके प्रकाश में वह अमरत्व है, जिसने सनातनधर्म के मूल का सिञ्चन किया है। यह जगत्कल्याणकारी भारत की अपनी निधि है; जिसके सम्मुख विश्व का प्रत्येक स्वाभिमानी सभ्य राष्ट्र श्रद्धा से नतमस्तक रहा है और रहेगा। अपौरुषेय वेद का अन्तिम अध्यायरूप उपनिषद् ज्ञान का आदि स्रोत और विद्या का अक्षय भण्डार है। वेदविद्या के चरम सिद्धान्त का प्रतिपादन कर उपनिषद् जीव को अल्पज्ञान से अनन्त ज्ञान की ओर, अल्पसत्ता और सीमित सामर्थ्य से अनन्त सत्ता और अनन्त शक्ति की ओर, जगद्दुःखों से अनन्तानन्द की ओर और जन्म-मृत्यु-बन्धन से अनन्त स्वातन्त्र्यमय शाश्वती शान्ति की ओर ले जाती है।

वस्तुतः प्राणियों के बाह्य अर्थों को प्रकाश करनेवाली तथा नाना प्रकार से उपकार करने वाली अनेक विद्याएं हैं, परन्तु परमपुरुषार्थ को प्रकाशित करनेवाली, परमार्थ को दिखलानेवाली तथा परम उपकारिणी विद्या उपनिषद् है। उपनिषद् हमारे उत्कृष्ट भारतीय ज्ञान की परिणति है। उपनिषदों में हिन्दू धर्म का निचोड़ है, हमारे धर्म की ऊँची से ऊँची और उत्तम से उत्तम शिक्षा इनमें है। आचार्य अक्षय कुमार वन्द्योपाध्याय का यह मन्तव्य सर्वथा समीचीन है—

"प्राचीन भारत में जिन असाधारण महामानव पुरुषों ने ऋषिचेतना प्राप्त करके अतीन्द्रिय और अतिमानस ज्ञान के द्वारा सम्पूर्ण जीव-जगत् के परमार्थिक स्वरूप को प्रत्यक्ष देखा था; जिनकी सम्यक्-सम्बुद्ध चेतना के सामने परम सत्य ने अनावृत और अविश्लिष्ट रूप से अपने स्वरूप को प्रकट कर दिया था; उनकी दिव्यवाणियाँ ही संकलित और संग्रहीत होकर उपनिषद् ग्रन्थ के रूप में मानवसमाज में प्रचारित हैं।"

उपनिषदों के सिद्धान्त इतने गूढ़ और सार्वभौम हैं कि उनका विद्वानों पर, चाहे वे किसी देश के निवासी और किसी भी धर्म के अनुयायी क्यों न हों, गहरा प्रभाव पड़ा है। वेदान्तदर्शन की महिमा पर मुग्ध होने वाले

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

Scanned with CamScanner

विदेशी विद्वानों में सबसे पहले थे - अरबदेशीय विद्वान अलबेरूनी। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान शोपेनहर ने उपनिषदों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। उनका कथन है-

"In the whole world, there is no study so elevating as that of the Upanishads. It has been the solace of my life. It will be the solace of my death."

अर्थात
सम्पूर्ण विश्व में उपनिषदों के समान जीवन को ऊँचा उठानेवाला कोई दूसरा अध्ययन का विषय नहीं है। उनसे मेरे जीवन को शान्ति मिली है। उन्हीं से मुझे मृत्यु के बाद भी शान्ति मिलेगी।

शोपेनहर के इस मन्तव्य का मैक्समूलर ने समर्थन किया है। उनकी दृष्टि में-

"If these words of Schopenhauer required any confirmation I would willingly give it as a result of my life-long study."

अर्थात
शोपेनहर के इन शब्दों के लिए यदि किसी समर्थन की आवश्यकता हो तो अपने जीवनभर के अध्ययन के आधार पर मैं उनका प्रसन्नतापूर्वक समर्थन करूँगा।

पाल डायसन नामक जर्मनी के एक अन्य विद्वान ने उपनिषदों का मूल संस्कृत में अध्ययन करके 'Philosophy of the Upanishads' नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक का निर्माण किया। उन्होंने लिखा है कि उपनिषदों के भीतर, जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही, सम्भवतः सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है-

"Philosophical conceptions unequalled in India, or perhaps anywhere else in the world."

Dhananjay Vasudeo Dwivedi
Scanned with CamScanner

Dhananjay Vasudeo Dwivedi

डॉ० एनी बेसेन्ट ने उपनिषद् को मानवचेतना का सर्वोच्च फल कहा है:—

"Personally I regard the Upanishads as the highest product of the human mind, the crystallized wisdom of divinely illumined men."

Scanned with CamScanner